परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

❊ जन्मदिवस 19–03–1971 ❊ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ❊ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

अज्ञात प्रतिमा की खोज

सम्पादक
ब्रह्मचारी धर्मचन्द शास्त्री

प्रकाशक
आचार्यश्री धर्मश्रुत ग्रन्थमाला
दिल्ली

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

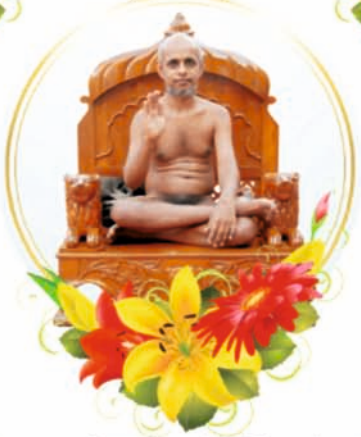

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

जैन चित्र कथा

अज्ञात प्रतिमा की खोज

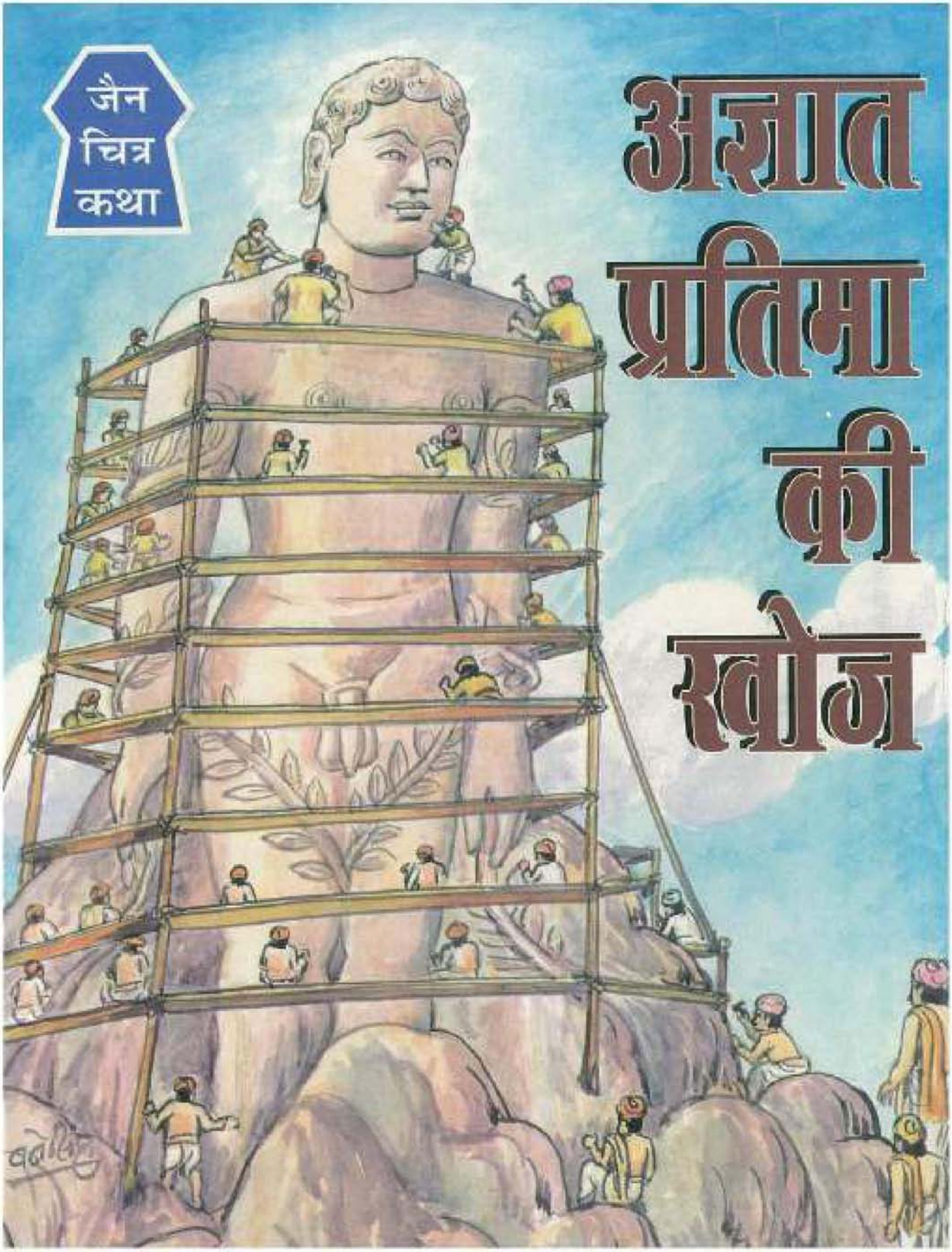

जैन चित्र कथा – अज्ञात प्रतिमा की खोज
सम्पादक – ब्र. धर्मचंद जैन शास्त्री, प्रतिष्ठाचार्य
शब्द – ब्र. रेखा जैन, टीकमगढ़
चित्रकार – बनेसिंह
प्रकाशन वर्ष – 2004
मूल्य 15.00 रुपये
प्रकाशक – आचार्य धर्म श्रुत ग्रन्थमाला एवं मानव शान्ति प्रतिष्ठान
जैन मंन्दिर, गुलाब वाटिका, लोनी रोड, दिल्ली
जि. गाजियाबाद
फोन. 0120–2600074, मो. 32537240
मुद्रक – शिवानी आर्ट प्रिंस दिल्ली-32

चारित्र चक्रवर्ति आचार्य

श्री शान्ति सागर जी

महाराज (दक्षिण) के

131 वॉ जन्म दिवस संयम वर्ष के

पावन पर्व पर प्रकाशित

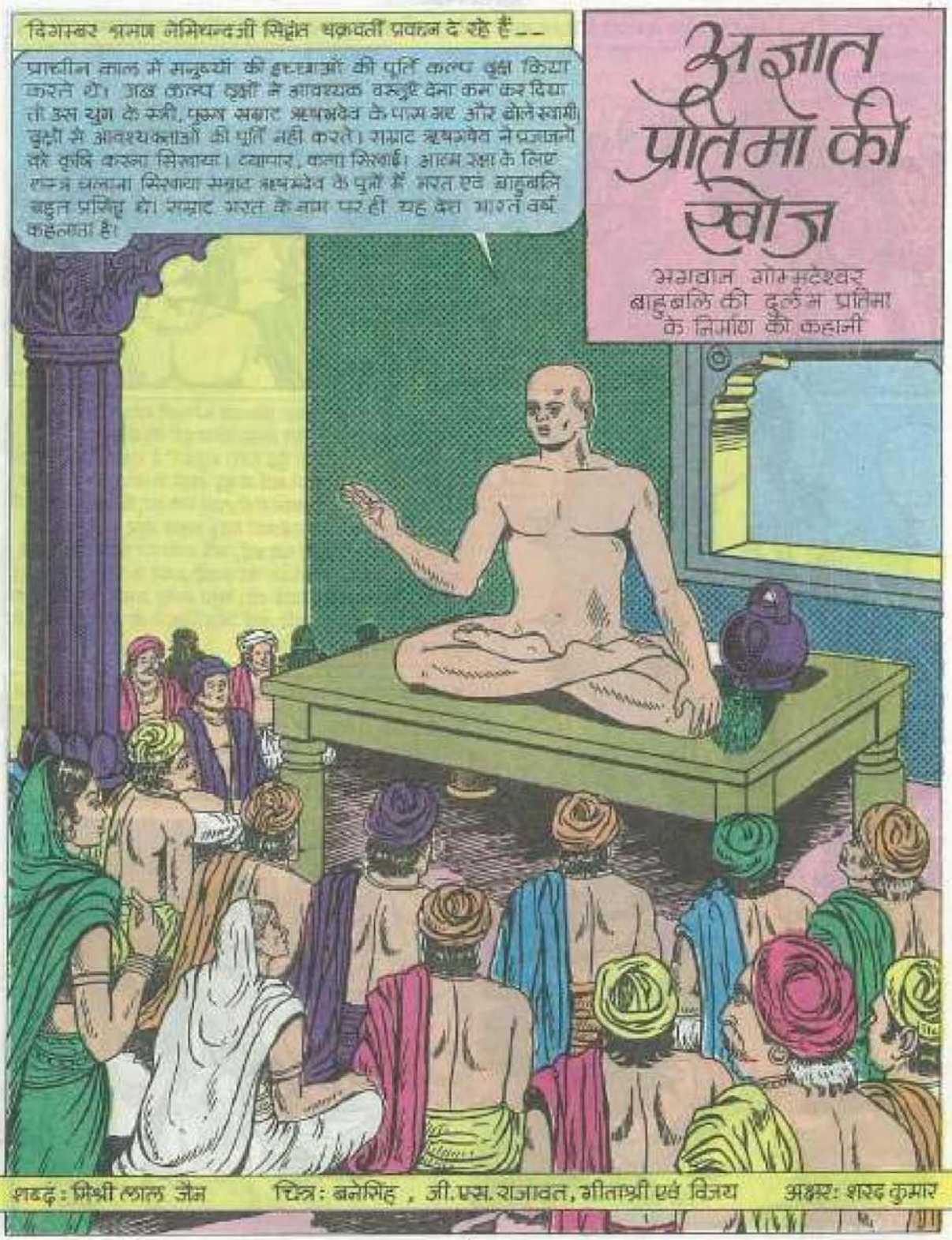

अज्ञात प्रतिमा की खोज
भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबलि की दुर्लभ प्रतिमा के निर्माण की कहानी
दिगम्बर श्रमण नेमिचन्दजी सिद्धांत चक्रवर्ती प्रवचन दे रहे हैं--
प्राचीन काल में मनुष्यों की इच्छाओं की पूर्ति कल्प वृक्ष किया करते थे। जब कल्प वृक्षों ने आवश्यक वस्तुएं देना कम कर दिया तो उस युग के स्त्री, पुरुष सम्राट ऋषभदेव के पास आए और बोले स्वामी, वृक्षों से आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करते। सम्राट ऋषभदेव ने प्रजाजनों को कृषि करना सिखाया। व्यापार, कला सिखाई। आत्म रक्षा के लिए शस्त्र चलाना सिखाया सम्राट ऋषभदेव के पुत्रों में भरत एवं बाहुबलि बहुत प्रसिद्ध थे। सम्राट भरत के नाम पर ही यह देश भारत वर्ष कहलाता है।
शब्द: मिश्री लाल जैन
चित्र: बनेसिंह, जी.एस. राजावत, गीताश्री एवं विजय
अक्षर: शरद कुमार

मैं आज आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की कथा आप सुनाता हूँ।
एक दिन सम्राट ऋषभदेव के राज दरबार में नीलांजना-तिलोत्तमा नामक नर्तकी नाच रही थी। नाचते समय उसकी मृत्यु हो गई।
इस दृश्य को देखकर सम्राट ऋषभदेव सन्यासी बन गए। दिगम्बर सन्यासी बनने के पहले उनने अपना राज्य पुत्रों को सौंप दिया। बाद में सम्राट भरत और बाहुबली में युद्ध हुआ। बाहुबली ने चक्रवर्ती सम्राट भरत को हरा दिया, किन्तु अपने भाई से युद्ध करने के कारण उन्हें वैराग्य उत्पन्न हुआ और युद्ध स्थल में ही शस्त्र फेंक कर, दिगम्बर सन्यासी बन तपस्या करने जंगल में चले गए। उन्होंने बहुत कठोर तपस्या की उनके शरीर पर बेलें चढ़ गईं, सर्प शरीर पर चढ़ने लगे। सम्राट भरत ने बाहुबलि की साधना को स्थाई बनाने के लिए उनकी बहुत सुन्दर, विशाल मूर्ति बनवाई थी। बहुत लम्बा समय बीत गया, पता नहीं वह मूर्ति कहाँ है। यदि कोई खोज निकाले तो संसार की सब से सुन्दर प्रतिमा प्रमाणित होगी।
गंगवंश के महाराज राचमल्ल के मंत्री वीर चामुण्डराय की माँ चिन्तित मुद्रा में बैठी है –
आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में गोम्मटेश्वर बाहुबलि की प्रतिमा की प्यास जगा दी। बाहुबलि की उस सुन्दर मूर्ति के दर्शन किए बिना संसार में सूना-सूना लगता है।

स्वामी! आपका स्वागत है।
प्रिय अजिता! कुशल तो है!

हाँ स्वामी। सन्देशवाहक आपकी वीरता की कथाएँ सुनाया करता था। सुनकर सब का मन प्रसन्नता से भर जाता था।
प्रिय! युद्ध तो जीवन का अंग बन गया है उसकी बात छोड़ो। माँ स्वस्थ और प्रसन्न तो हैं?

स्वामी। माँ पूर्ण स्वस्थ है, किन्तु आज आचार्य श्री का प्रवचन सुनकर आई है तब से बहुत उदास लगती है।

आचार्य श्री के प्रवचन तो उदासी और चिन्ता को दूर करते हैं। प्रवचन और उदासी में क्या सम्बंध?
देव! मुझे क्या पता?

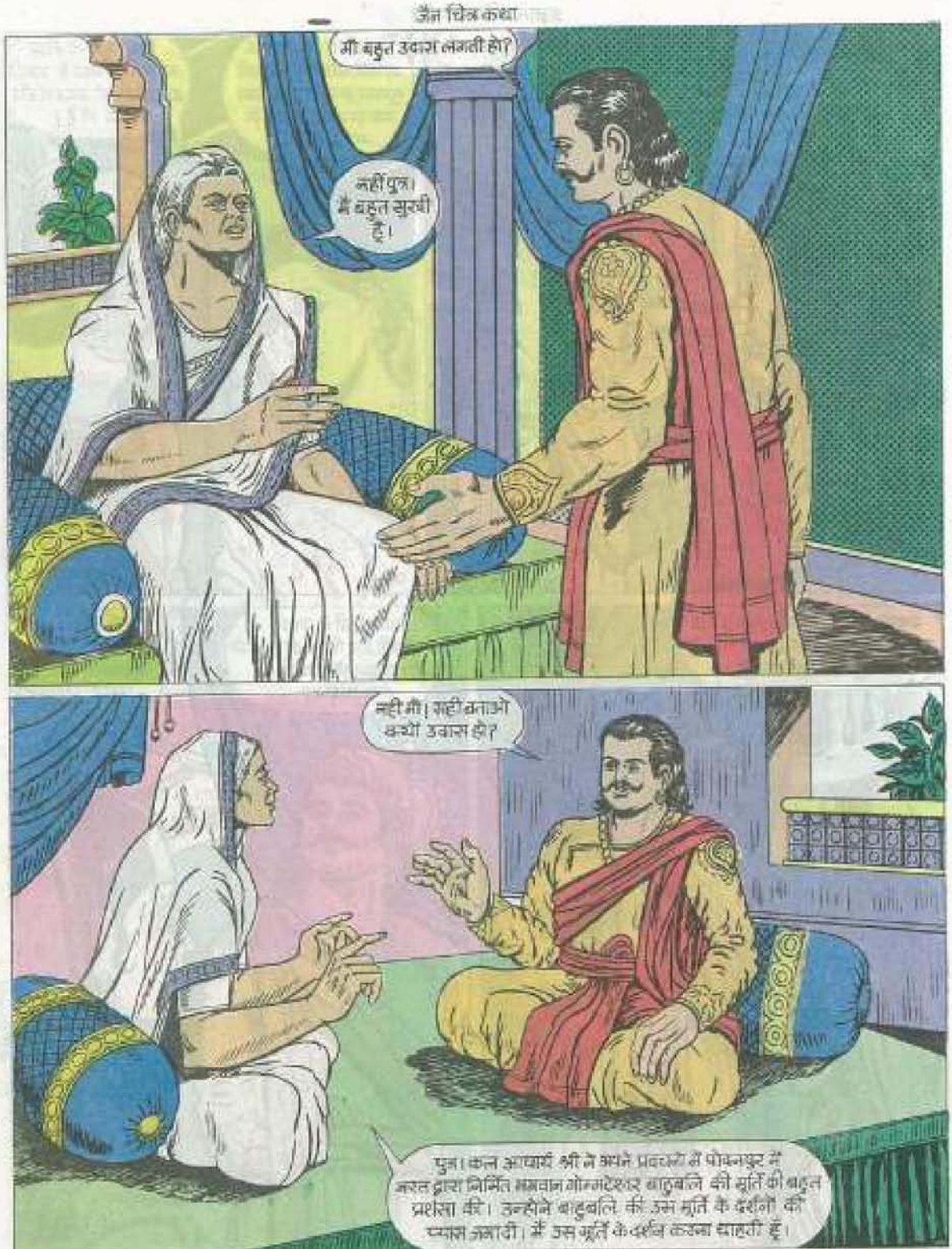
माँ बहुत उदास लगती हो?
नहीं पुत्र। मैं बहुत सुखी हूँ।
नहीं माँ! सही बताओ कयों उदास हो?
पुत्र। कल आचार्य श्री ने अपने प्रवचनों में पोदनपुर में भरत द्वारा निर्मित भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबलि की मूर्ति की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने बाहुबलि की उस मूर्ति के दर्शनों की प्यास जगा दी। मैं उस मूर्ति के दर्शन करना चाहती हूँ।

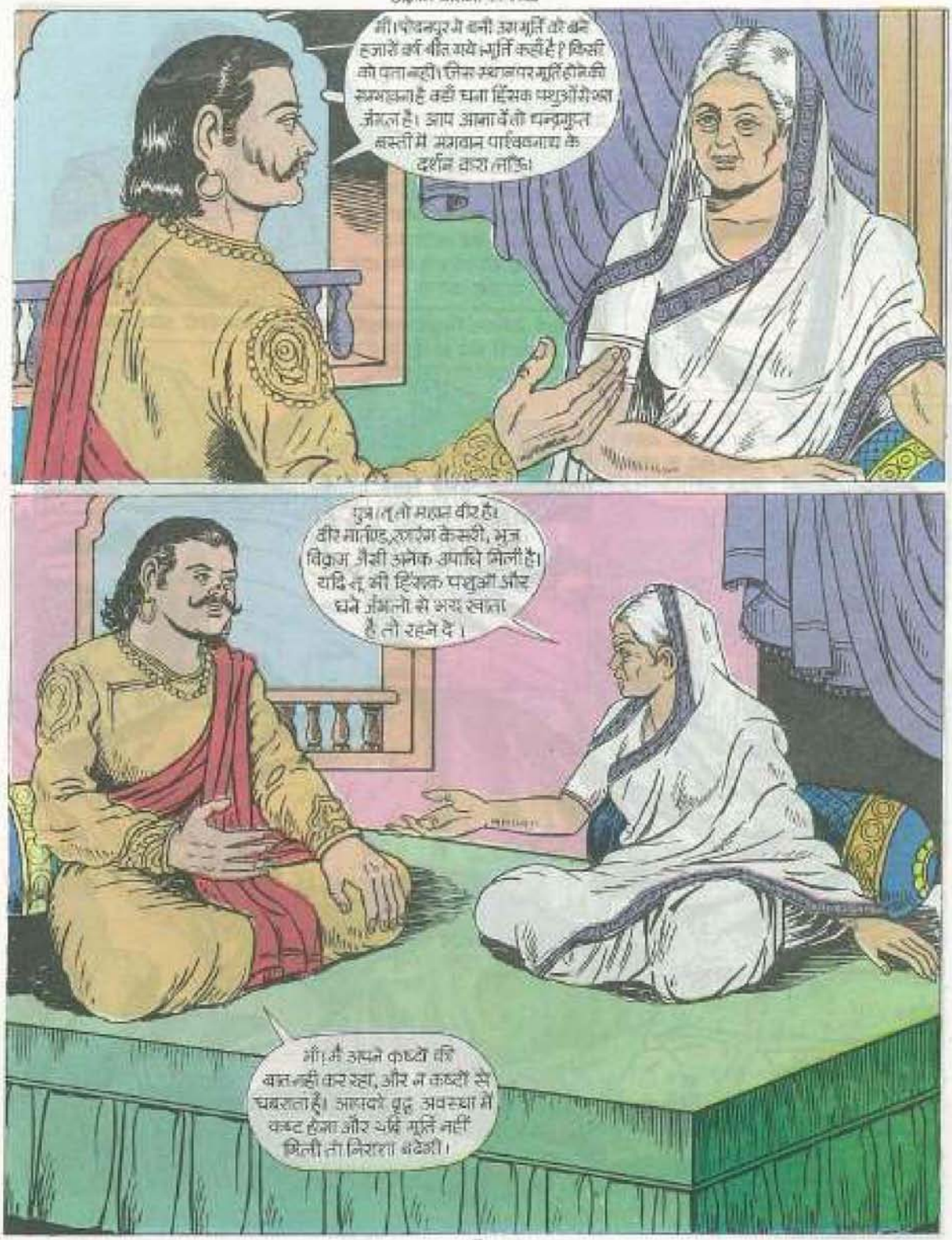

माँ! पौदनपुर में बनी उस मूर्ति को बने हजारों वर्ष बीत गये। मूर्ति कहाँ है? किसी को पता नहीं। जिस स्थान पर मूर्ति होने की सम्भावना है वहाँ घना हिंसक पशुओं से भरा जंगल है। आप आज्ञा दें तो चन्द्रगुप्त बस्ती में भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन करा लाऊँ।
पुत्र! तू तो महान वीर है। वीर मार्तण्ड, रणरंग केसरी, भुज विक्रम जैसी अनेक उपाधि मिली हैं। यदि तू भी हिंसक पशुओं और घने जंगलों से भय खाता है तो रहने दे।
माँ! मैं अपने कष्टों की बात नहीं कर रहा, और न कष्टों से घबराता हूँ। आपको वृद्ध अवस्था में कष्ट होगा और यदि मूर्ति नहीं मिली तो निराशा होगी।

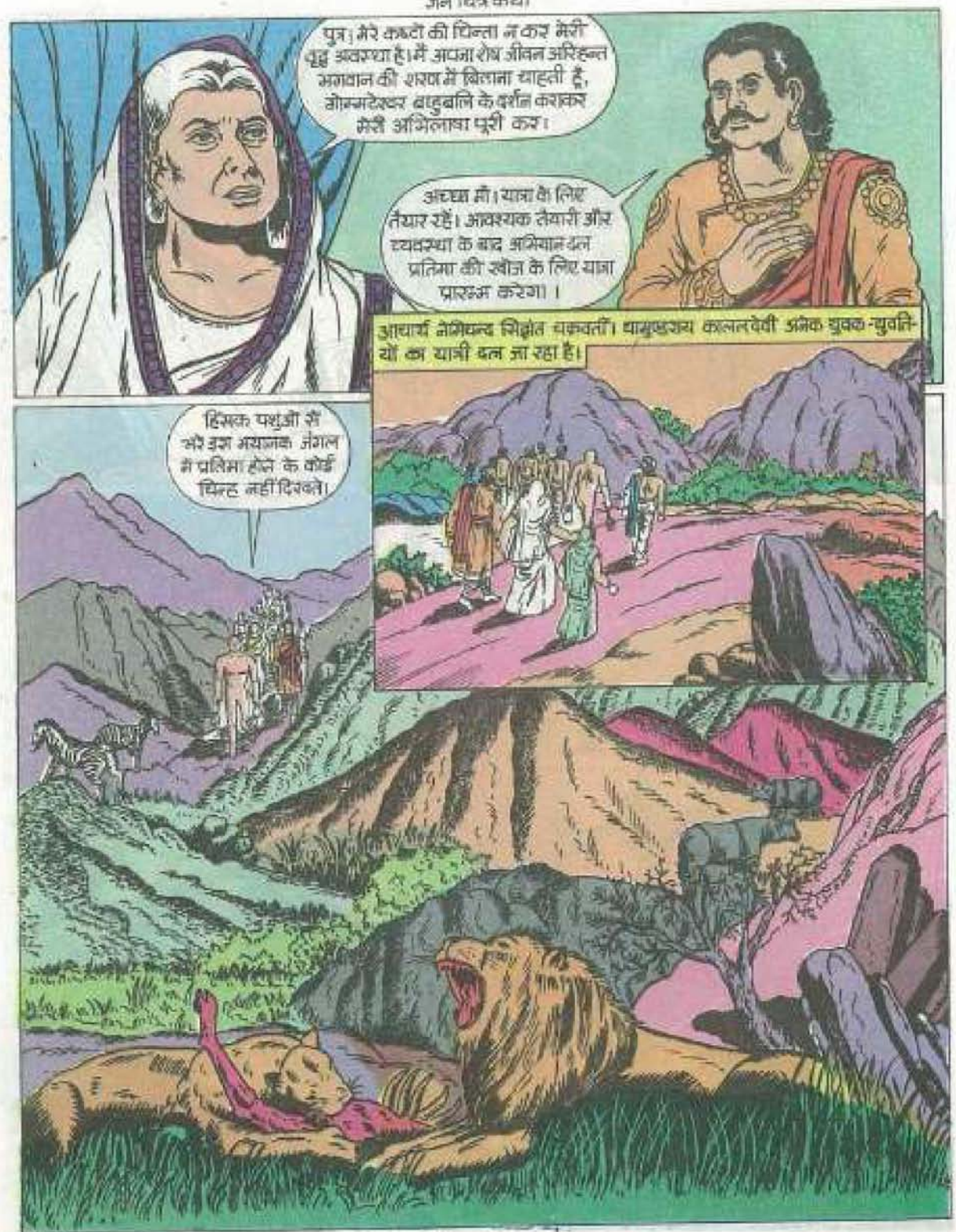

पुत्र! मेरे कष्टों की चिन्ता न कर मेरी वृद्ध अवस्था है। मैं अपना शेष जीवन अरिहन्त भगवान की शरण में बिताना चाहती हूँ, गोम्मटेश्वर बाहुबलि के दर्शन कराकर मेरी अभिलाषा पूरी कर।
अच्छा माँ। यात्रा के लिए तैयार रहें। आवश्यक तैयारी और व्यवस्था के बाद अभियान दल प्रतिमा की खोज के लिए यात्रा प्रारम्भ करेगा।
आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती। चामुण्डराय काललदेवी अनेक युवक-युवतियों का यात्री दल जा रहा है।
हिंसक पशुओं से और इस भयानक जंगल में प्रतिमा होने के कोई चिन्ह नहीं दिखते।

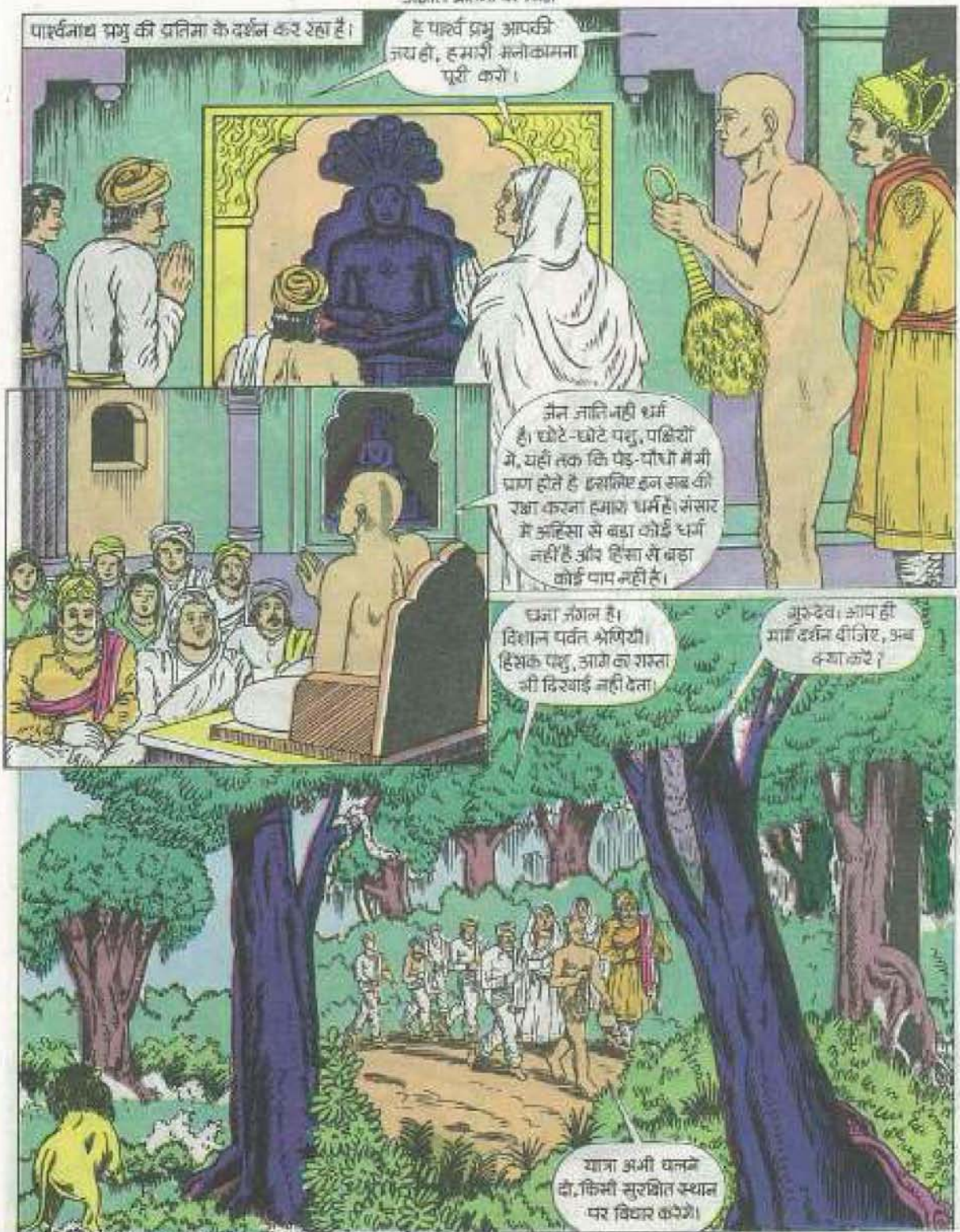
पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के दर्शन कर रहा है।
हे पार्श्व प्रभु आपत्ति जय हो, हमारी मनोकामना पूरी करो।
जैन जाति नहीं धर्म है। छोटे-छोटे पशु, पक्षियों में, यहाँ तक कि पेड़-पौधों में भी प्राण होते है इसलिए इन सब की रक्षा करना हमारा धर्म है। संसार में अहिंसा से बड़ा कोई धर्म नहीं है और हिंसा से बड़ा कोई पाप नहीं है।
घना जंगल है। विशाल पर्वत श्रेणियाँ। हिंसक पशु, आगे का रास्ता भी दिखाई नहीं देता।
गुरुदेव। आप ही मार्ग दर्शन दीजिए, अब क्या करें?
यात्रा अभी चलने दो, किसी सुरक्षित स्थान पर विचार करेंगे।

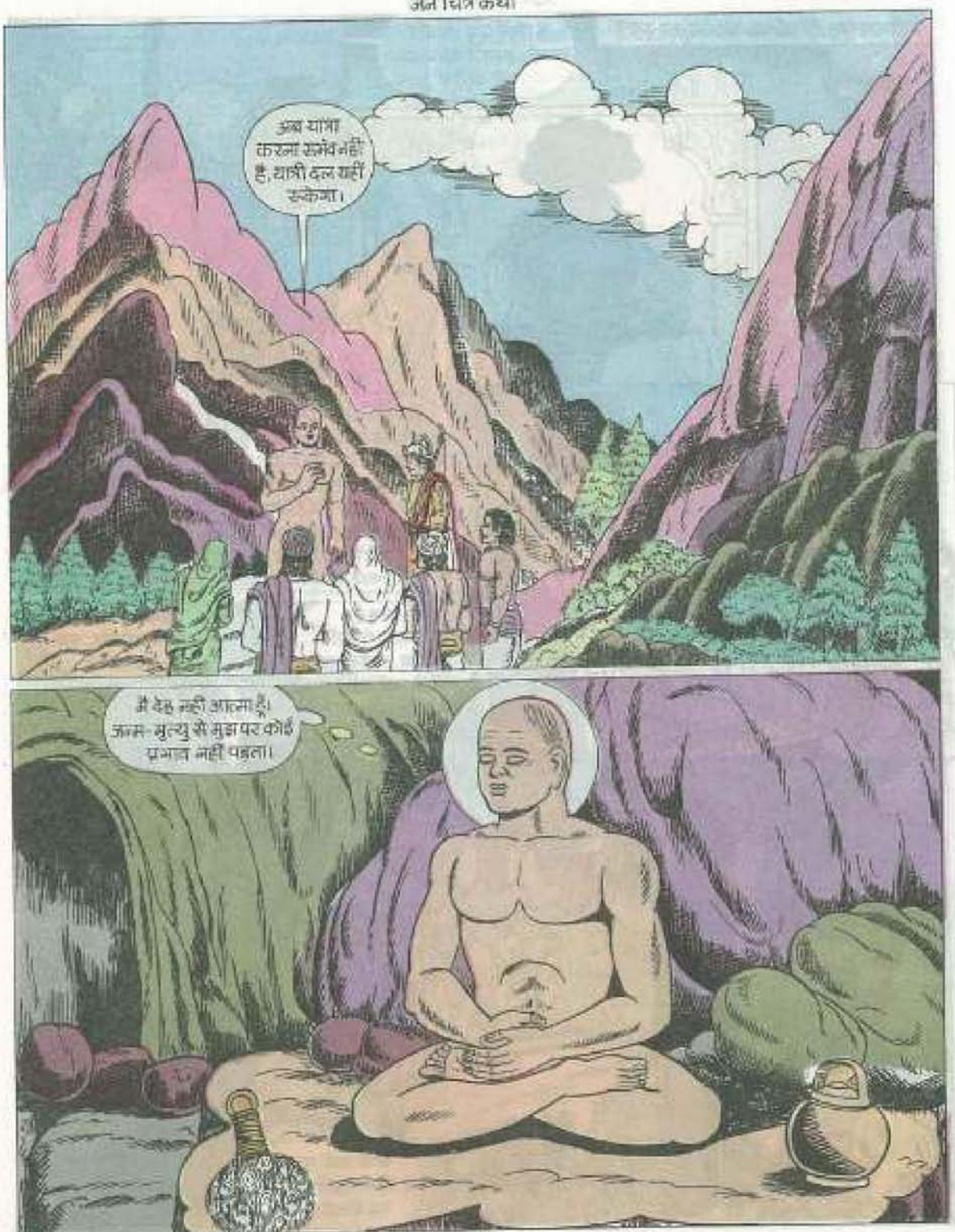
अब यात्रा करना सम्भव नहीं है, यात्री दल यहीं रुकेगा।
मैं देह नहीं आत्मा हूँ। जन्म-मृत्यु से मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

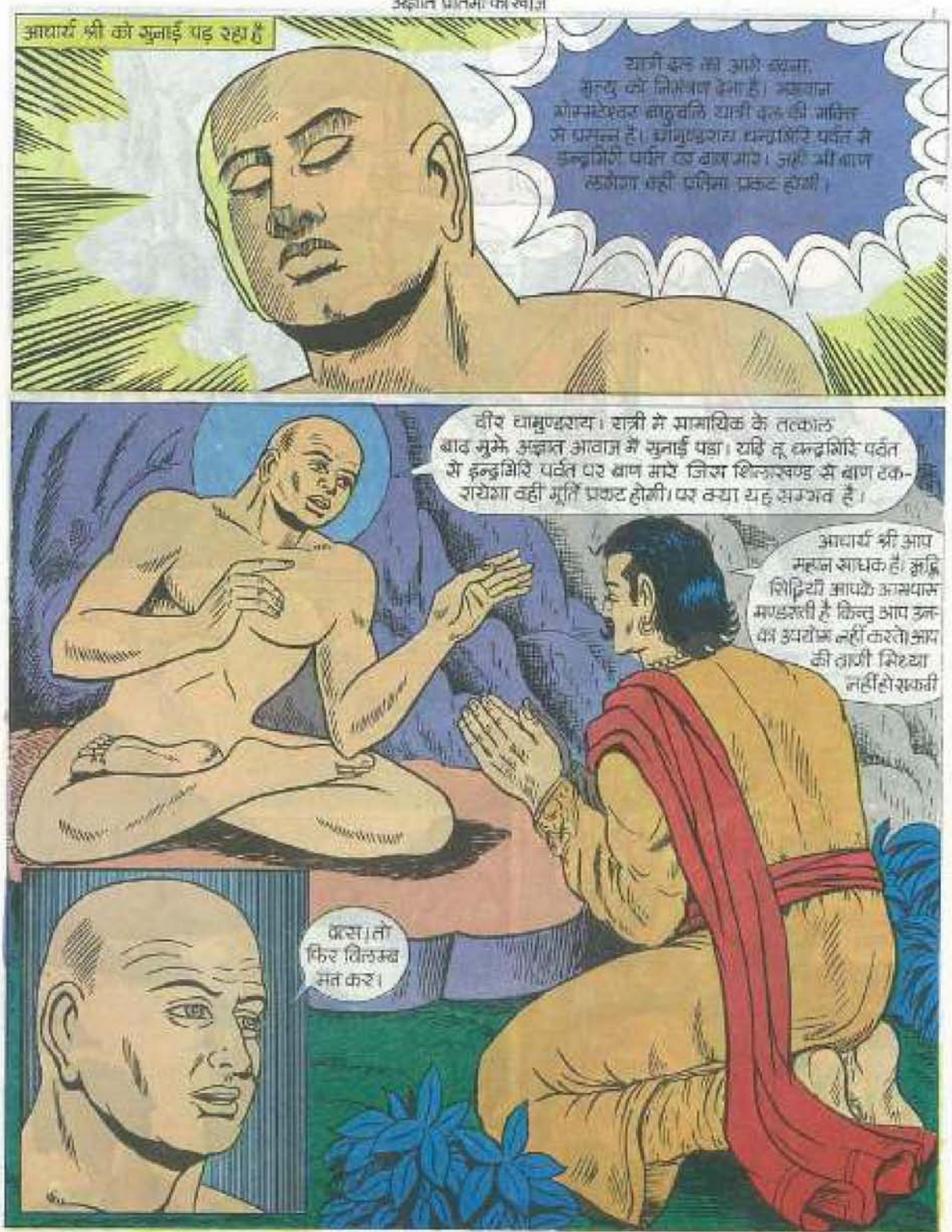

आचार्य श्री को सुनाई पड़ रहा है
यात्री दल का आगे बढ़ना, मृत्यु को निमंत्रण देना है। भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबलि यात्री दल की भक्ति से प्रसन्न हैं। चामुण्डराय चन्द्रगिरि पर्वत से इन्द्रगिरि पर्वत पर बाण मारे। जहाँ भी बाण लगेगा वहीं प्रतिमा प्रकट होगी।
वीर चामुण्डराय। रात्री मे सामायिक के तत्काल बाद मुझे अज्ञात आवाज में सुनाई पडा। यदि तू चन्द्रगिरि पर्वत से इन्द्रगिरि पर्वत पर बाण मारे जिस शिलाखण्ड से बाण टकरायेगा वहीं मूर्ति प्रकट होगी। पर क्या यह सम्भव है।
आचार्य श्री आप महान साधक हैं। ऋद्धि सिद्धियाँ आपके आसपास मण्डराती हैं किन्तु आप इनका उपयोग नहीं करते। आप की वाणी मिथ्या नहीं हो सकती
बस। तो फिर विलम्ब मत कर।

गुरुदेव आज्ञा दीजिए।
वत्स तेरी मनोकामना पूरी हो।

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली की जय।
भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली की जय।

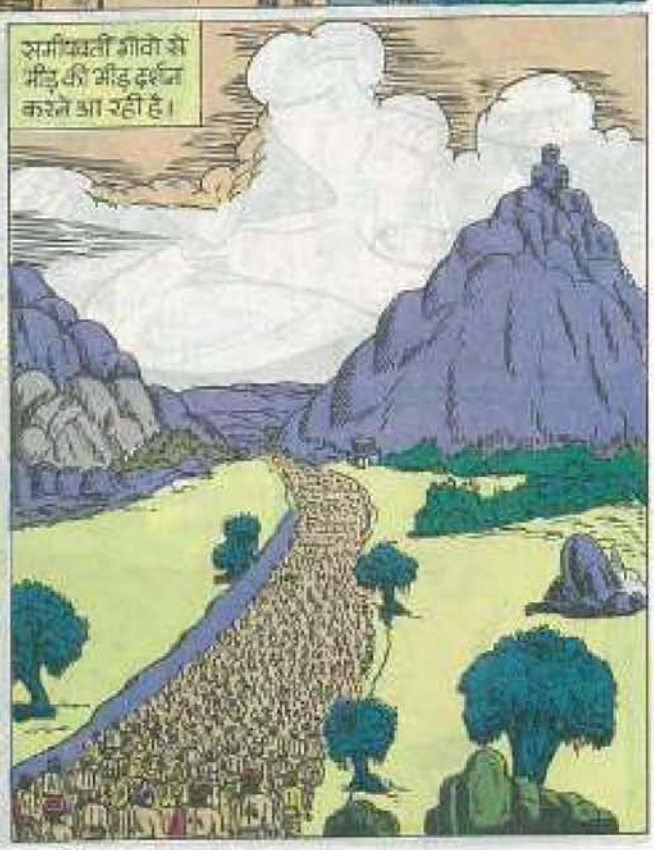
श्रमणियाँ गाँवों से भीड़ की भीड़ दर्शन करने आ रही है।

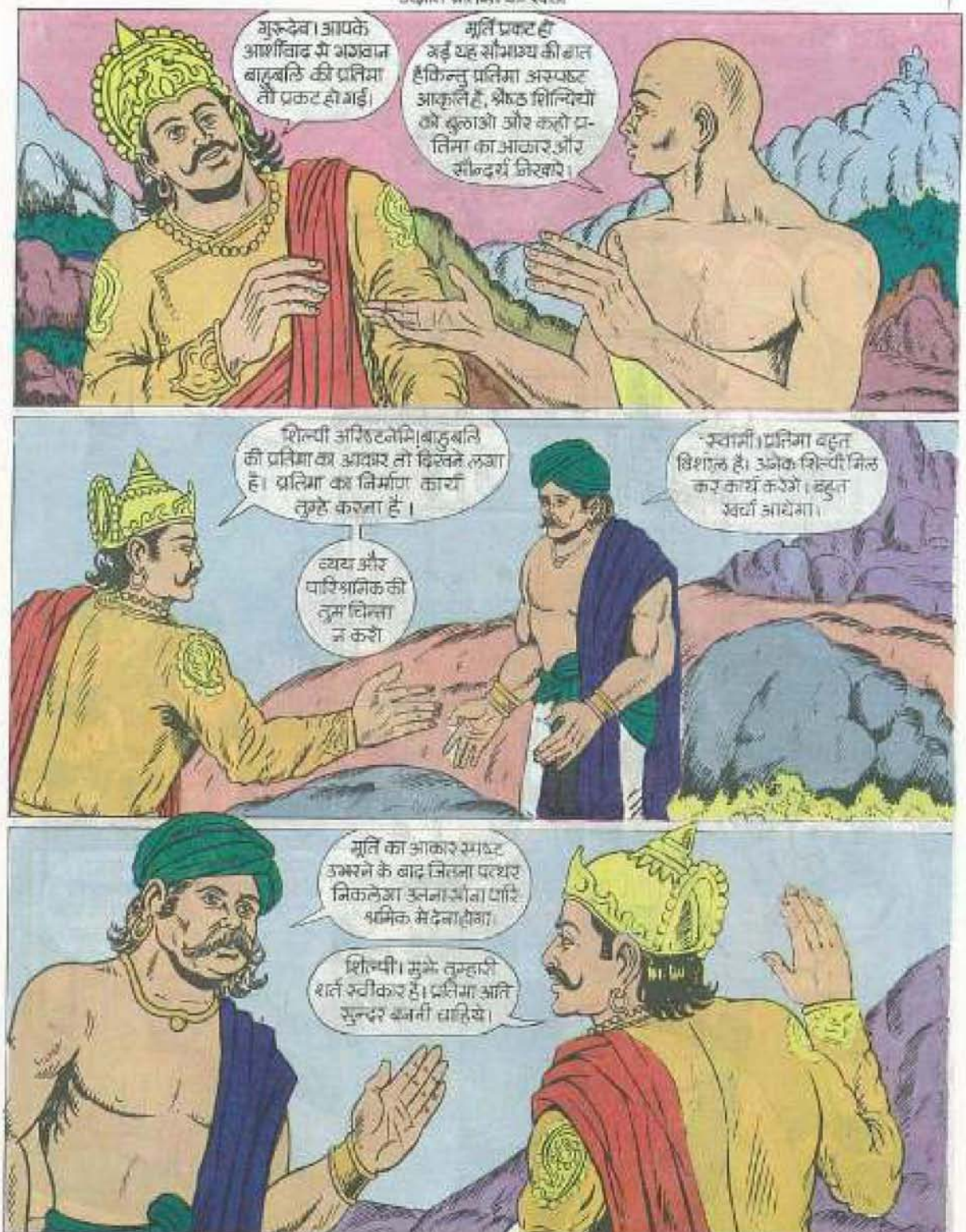
गुरुदेव। आपके आशीर्वाद से भगवान बाहुबलि की प्रतिमा तो प्रकट हो गई।
मूर्ति प्रकट हो गई यह सौभाग्य की बात है किन्तु प्रतिमा अस्पष्ट आकृति है, श्रेष्ठ शिल्पियों को बुलाओ और करो प्रतिमा का आकार और सौन्दर्य निखारो।
शिल्पी अरिष्टनेमि! बाहुबलि की प्रतिमा का आकार तो दिखने लगा है। प्रतिमा का निर्माण कार्य तुम्हें करना है।
व्यय और पारिश्रमिक की तुम चिन्ता न करो
स्वामी। प्रतिमा बहुत विशाल है। अनेक शिल्पी मिल कर कार्य करेंगे। बहुत खर्च आयेगा।
मूर्ति का आकार स्पष्ट उभरने के बाद जितना पत्थर निकलेगा उतना सोना पारिश्रमिक में देना होगा।
शिल्पी। मुझे तुम्हारी शर्त स्वीकार है। प्रतिमा अति सुन्दर बननी चाहिये।

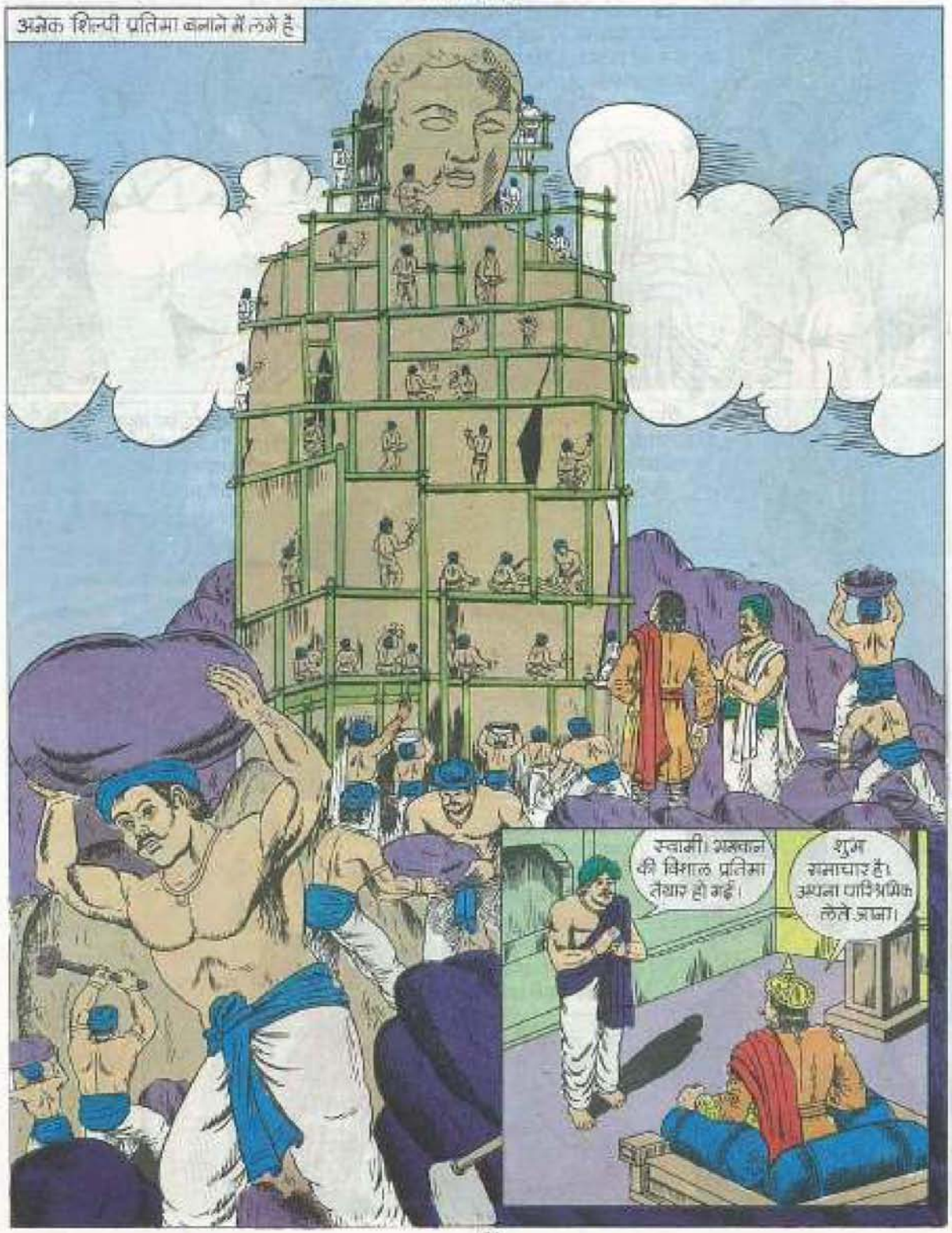
अनेक शिल्पी प्रतिमा बनाने में लगे है
स्वामी! भगवान की विशाल प्रतिमा तैयार हो गई।
शुभ समाचार है। अपना पारितोषिक लेते जाना।

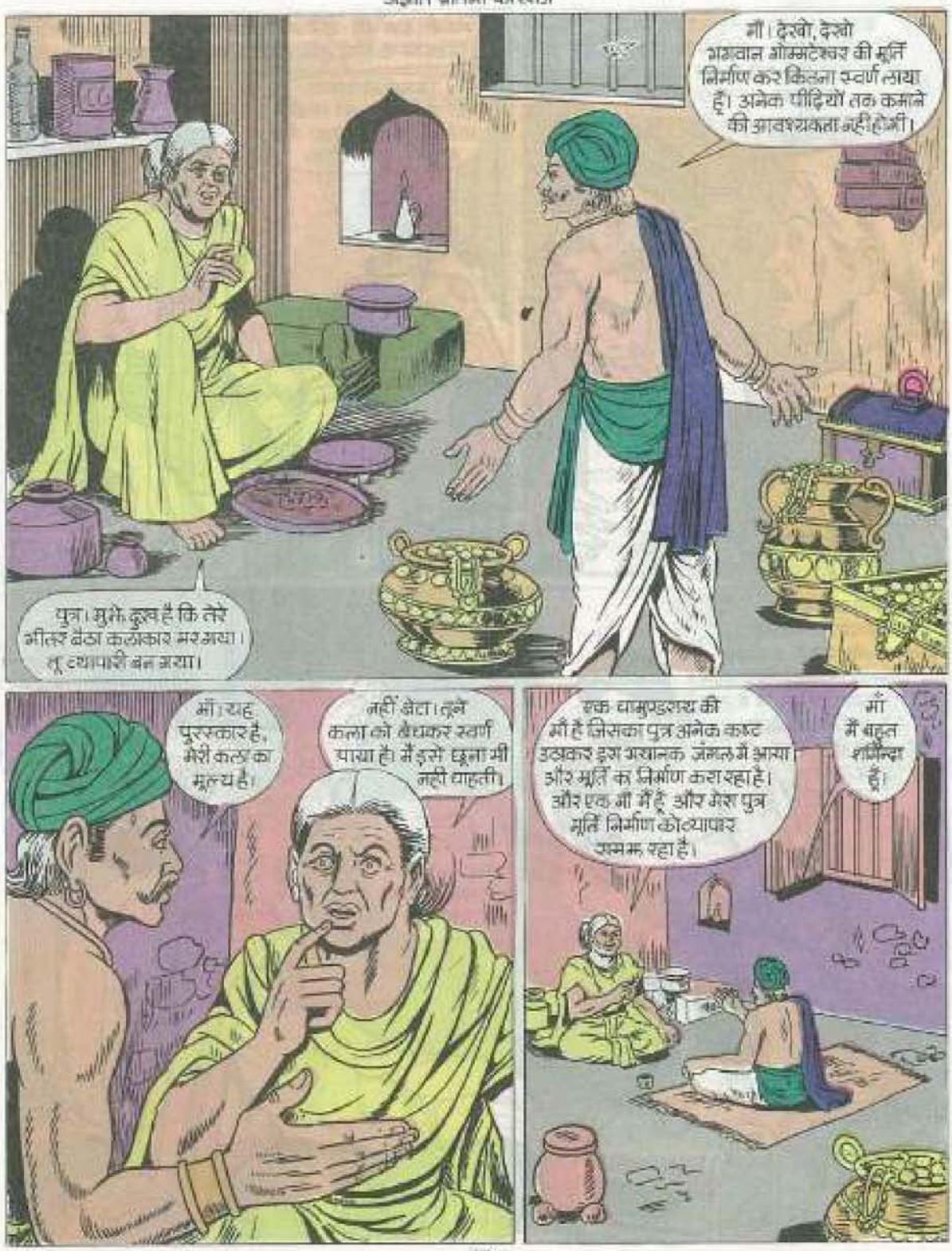
माँ। देखो, देखो भगवान गोम्मटेश्वर की मूर्ति निर्माण कर कितना स्वर्ण लाया हूँ। अनेक पीढ़ियों तक कमाने की आवश्यकता नहीं होगी।
पुत्र। मुझे दुख है कि तेरे भीतर बैठा कलाकार मर गया। तू व्यापारी बन गया।
माँ। यह पुरस्कार है, मेरी कला का मूल्य है।
नहीं बेटा। तूने कला को बेचकर स्वर्ण पाया है। मैं इसे छूना भी नहीं चाहती।
एक चामुण्डराय की माँ है जिसका पुत्र अनेक कष्ट उठाकर इस भयानक जंगल में आया। और मूर्ति का निर्माण करा रहा है। और एक माँ मैं हूँ और मेरा पुत्र मूर्ति निर्माण को व्यापार समझ रहा है।
माँ मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ।

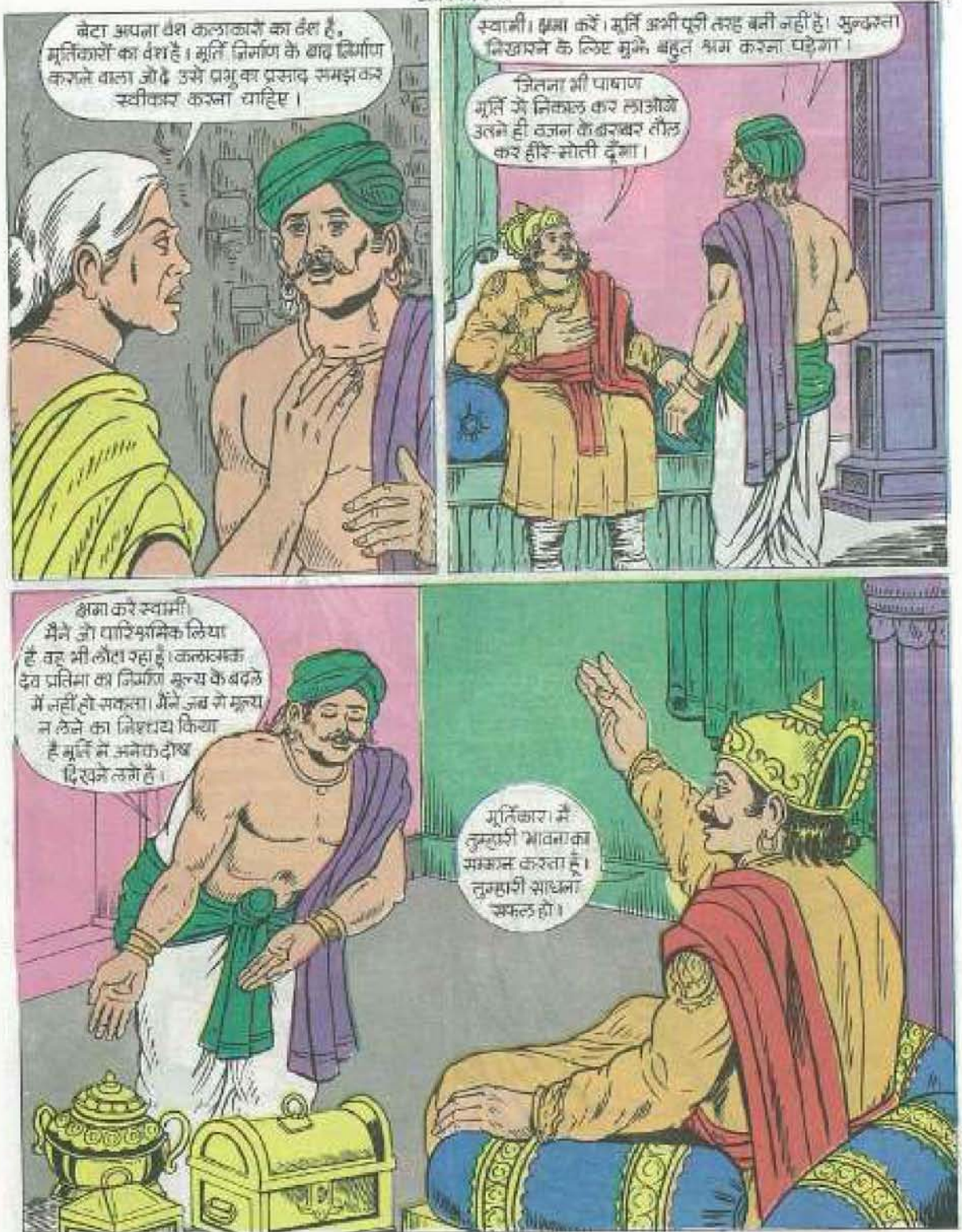
बेटा अपना वंश कलाकारों का वंश है, मूर्तिकारों का वंश है। मूर्ति निर्माण के बाद निर्माण करने वाला जो है उसे प्रभु का प्रसाद समझ कर स्वीकार करना चाहिए।
स्वामी। क्षमा करें। मूर्ति अभी पूरी तरह बनी नहीं है। सुन्दरता निखारने के लिए मुझे बहुत श्रम करना पड़ेगा।
जितना भी पाषाण मूर्ति से निकाल कर लाओगे उतने ही वजन के बराबर तौल कर हीरे-मोती दूँगा।
क्षमा करें स्वामी। मैंने जो पारिश्रमिक लिया है वह भी लौटा रहा हूँ। कलात्मक देव प्रतिमा का निर्माण मूल्य के बदले में नहीं हो सकता। मैंने जब से मूल्य न लेने का निश्चय किया है मूर्ति में अनेक दोष दिखने लगे हैं।
मूर्तिकार। मैं तुम्हारी भावना का सम्मान करता हूँ। तुम्हारी साधना सफल हो।

अहा! कितनी सुन्दर मूर्ति बनी है। विश्वास नहीं होता कि यह मूर्ति मैंने ही बनाई है। मेरा जीवन सफल हो गया।

गुरुदेव। श्रोम्मटेश्वर बाहुबली की अनुपम, अद्भुत मूर्ति बन कर तैयार हो गई।
वत्स। मैं उस दिव्य प्रतिमा के दर्शन कर आया हूँ। ऐसी दिव्य और विशाल, मैंने न देखी और न सुनी।

गुरुदेव। मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा और महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम शीघ्र रखने की भावना है।
विचार उत्तम है, चामुण्डराय। तैयारियाँ प्रारम्भ करदो।

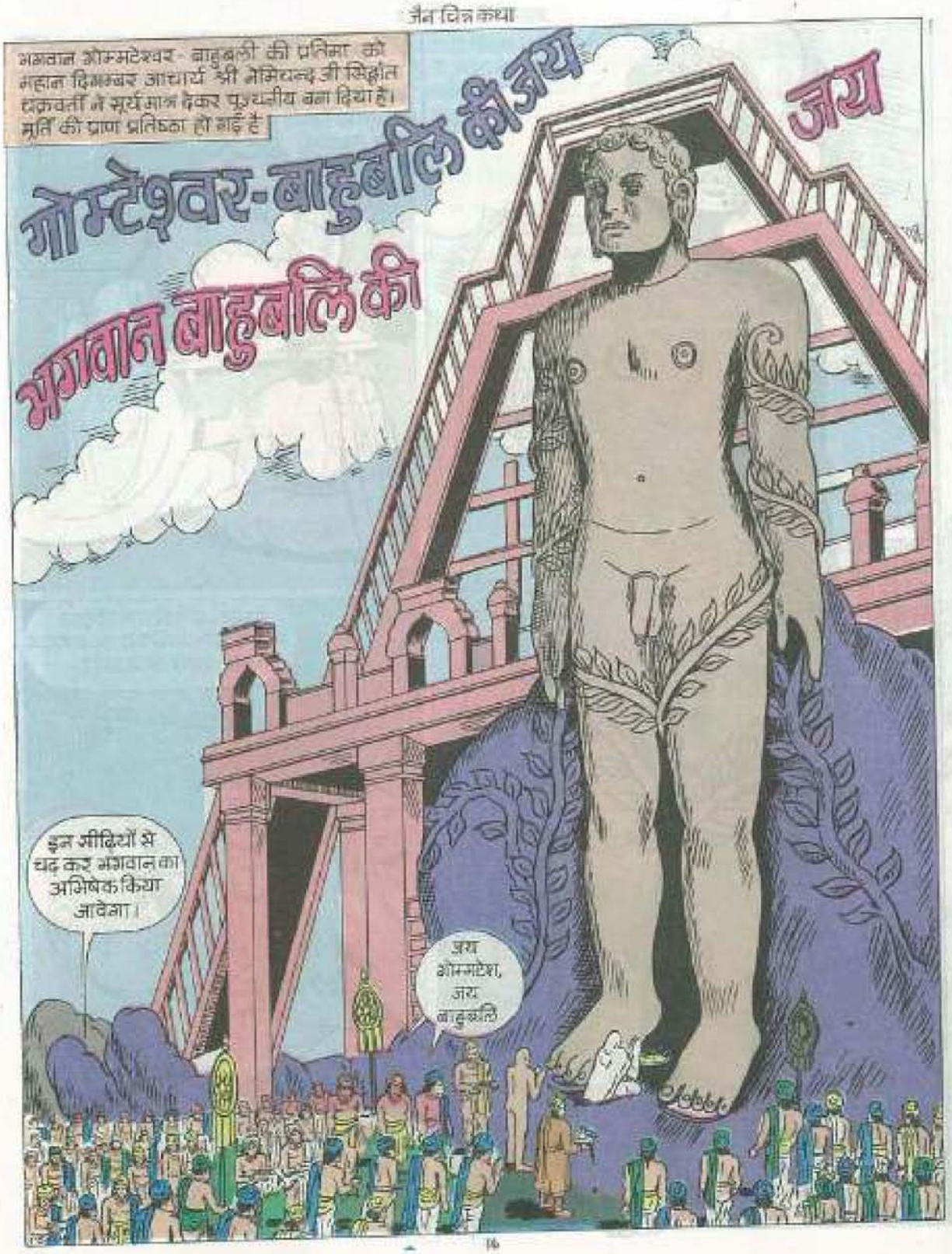
भगवान गोम्मटेश्वर - बाहुबली की प्रतिमा को महान दिगम्बर आचार्य श्री नेमिचन्द्र जी सिद्धांत चक्रवर्ती ने सूर्य मंत्र देकर पूज्यनीय बना दिया है। मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हो गई है
गोम्टेश्वर-बाहुबलि की जय
भगवान बाहुबलि की जय
इन सीढ़ियों से चढ़ कर भगवान का अभिषेक किया जावेगा।
जय गोम्मटेश, जय बाहुबली

आदि सिद्ध, तुम आदि देव, तुम ही हो मेरे राम
दिव्य सुनन्दा सुत चरणों में मेरे नित्य प्रणाम।
आश्चर्य! जल प्रतिमा के शीश पर बिखर कर रह गया।
प्रभु अभिषेक स्वीकार नहीं कर रहे, प्रतिमा के अभिषेक में क्या कोई दैवीय बाधा है? यह मंगल सूचक नहीं है।

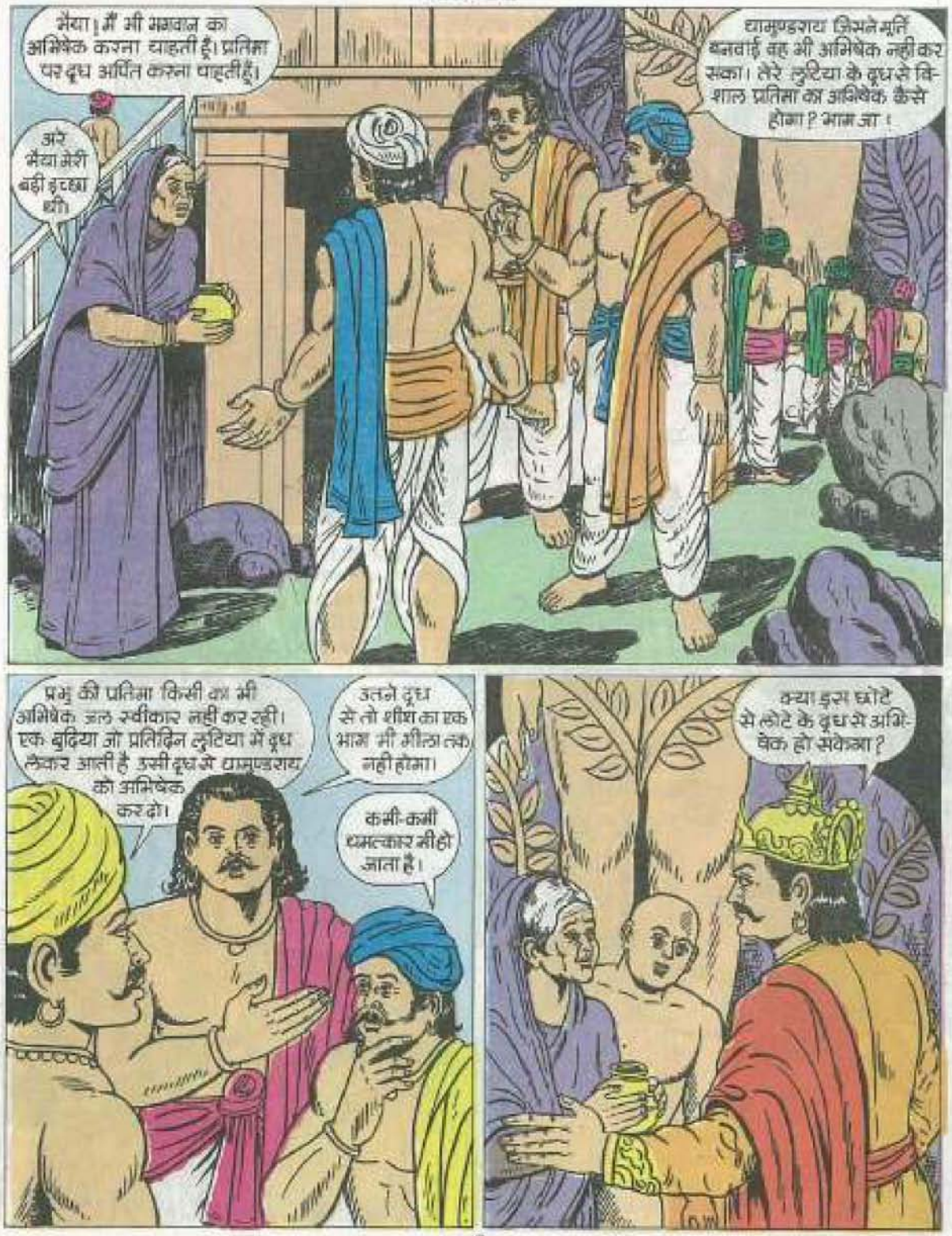
भैया! मैं भी भगवान का अभिषेक करना चाहती हूँ। प्रतिमा पर दूध अर्पित करना चाहती हूँ।
अरे भैया मेरी बड़ी इच्छा थी।
चामुण्डराय जिसने मूर्ति बनवाई वह भी अभिषेक नहीं कर सका। तेरे लुटिया के दूध से विशाल प्रतिमा का अभिषेक कैसे होगा? भाग जा।
प्रभु की प्रतिमा किसी का भी अभिषेक जल स्वीकार नहीं कर रही। एक बुढ़िया जो प्रतिदिन लुटिया में दूध लेकर आती है उसी दूध से चामुण्डराय को अभिषेक कर दो।
उतने दूध से तो शीश का एक भाग भी भीगा तक नहीं होगा।
कभी-कभी चमत्कार भी हो जाता है।
क्या इस छोटे से लोटे के दूध से अभिषेक हो सकेगा?

हाँ माँ करो अभिषेक शायद तुम्हारे पुण्य से अभिषेक हो जाए।
आश्चर्य! महान आश्चर्य! छोटे से छेद के दूध से शीश से धरणी तक चला गया। दूध का प्रवाह रुक ही नहीं रहा।
गोम्मटेश्वर बाहुबलि की जय
भगवान बाहुबलि की जय
माँ मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूँगा।
अभिषेक के बाद वह वृद्ध महिला नहीं दिखी जाओ खोज कर लाओ। मैं उसका ऋणी हूँ।
जो आज्ञा स्वामी।

स्वामी। राज्य कर्मचारियों से बहुत खोजा पर नहीं मिली। अभिषेक के समय उपस्थित लोगों ने भी पूछा उन्होंने बताया अभिषेक के बाद से नहीं दिखी, अदृश्य हो गई, कोई अलौकिक शक्ति थी।

गुरुदेव! क्या कारण है? प्रभु प्रतिमा मेरा अभिषेक स्वीकार नहीं किया?
वत्स। तुझे घमण्ड हो गया था कि तूने इतनी विशाल और सुन्दर मूर्ति का निर्माण करवाया है।

वत्स। भक्ति और अभिमान एक साथ नहीं रहते। विनम्रता सबसे बड़ा गुण है।
मैं बहुत लज्जित हूँ गुरुदेव! क्षमा चाहता हूँ। मूर्ति का निर्माण तो माँ कल्लदेवी की भावना और आपके आशीर्वाद से हुआ है।
उस वृद्धा की स्मृति में निर्मित सुन्दर कलात्मक प्रतिमा आज भी उस चमत्कार की घटना की याद दिलाती है।

सम्पादकीय

अज्ञात प्रतिमा की खोज

आराधना के क्षेत्र में सामान्य मनुष्य की यह मनोवृत्ति होती है कि वह अपनी सांसारिक समस्या का समाधान भी अपने आराध्य के व्यक्तित्व में ढूँढ़ना चाहता है, ऐसे समाधान देने वाले व्यक्तित्व की आराधना में मनुष्य अधिक रुचि, अधिक आकर्षण अनुभव करता है।

भगवान बाहुवली की मूर्ति के दर्शन करने एवं भक्ति करनी की भावना श्री गंग राजाओं के मंत्री तथा मुख्य सेनानायक श्री चामुण्डराय की माता काललदेवी की भक्ति से तथा दिगम्बर जैनाचार्य श्री नेमीचंद्राचार्य की प्रेरणा से उस अज्ञात बाहुवली को विन्ध्यगिरी की पहाड़ी पर विशाल शिला के अन्दर छिपे थे उनकी खोज कराकर उनको विराट बिम्ब का निर्माण किया। चामुण्डराय ने विशाल प्रस्तर-खण्ड को निपुण शिल्पियों से उत्कीर्ण करवा कर कलात्मक दिव्य प्रतिमा में बाहुवली की सौम्य छवि का आविर्भाव किया।

इतनी विशाल एवं कलात्मक मूर्ति संसार मे अन्यत्र अनुपलब्ध है। अवलोकन करने वाले का ललाट भले ही आकाश की ऊँचाई तक उठ जाय, उनका आध्यात्मिक भाल तो भगवान गोमटेश्वर के चरणों में ही रहेगा। 57 फुट ऊँची इस भव्य मूर्ति का सौन्दर्य अलौकिक है। इस अज्ञात प्रतिमा की प्रतिष्ठा करा कर गोमटेश्वर के रूप में दक्षिण भारत को एक देन दी। जो आज भी जन-जन के आराध्य है।

ब्र. धर्मचंद शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य

परम पू. चारित्र चक्रवर्ति **श्री आचार्य शान्तिसागर जी**

महाराज संयम वर्ष के पुनीत अवसर पर प्रकाशित।

आर्यिका सुभूषणमती माताजी

क्षुल्लिका राजमति माताजी

प्रकाशन सहयोगी

श्री भंवरीलाल बड़जात्या
चैन्नई

श्रीमती मनफूलबाई बड़जात्या ध.प.
चैन्नई